हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Aravind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ [✓] नहीं [ ]

मोबाइल नं. (Mobile No.): _____

ई-मेल पता (E-mail address): _____

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): _____

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): _____

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

उत्तम प्रयास

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 139 टिप्पणी (Remarks): _____

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) पहाड़ी हिंदी

हिन्दी भाषा की सभी उपभाषाओं में पहाड़ी हिंदी इस रूप में विशिष्ट है कि पहाड़ी हिंदी के विकास में आर्यभाषाओं के साथ-साथ चीनी, तिब्बती और खस जैसी अनार्य या आर्येतर भाषाओं का भी योगदान रहा है।

पहाड़ी हिंदी की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत हैं:-

① पहाड़ी हिंदी की प्रमुख बोलियाँ दो ही हैं:- कुमाउंनी और गढ़वाली, जो क्रमशः कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्र में बोली जाती है। यद्यपि ऐतिहासिक रूप से इनके विकास में राजस्थानी और ब्रजभाषा का भी योगदान रहा है।

② सानुनासिकीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है।

③ ब्रजभाषा और राजस्थानी की तरह ओकारांतता की प्रवृत्ति।

④ भविष्यकालिक क्रिया रूप 'ल' युक्त होते हैं. जैसे - चलाला।

⑤ भूतकालिक क्रिया रूप ब्रजभाषा के समान, जैसे चल्यौ, हुतो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(6) दूं, कौण, कूंण जैसे परसर्गों का प्रयोग देखने को मिलता है।

प्रसार-क्षेत्र और प्रभाव दोनो ही दृष्टियों से पहाड़ी हिंदी का दायरा सीमित है। लोकसाहित्य उपलब्ध है परन्तु साहित्य के शिष्ट / लिखित रूप का वैसा विकास नहीं।

—x—

5/10 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) रहीम के काव्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में रहीम एक बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में सामने आते हैं। सेनापति, नवरत्न, विद्वान और कवि। वे फारसी, ब्रज, अवधी, तुर्की, संस्कृत भाषाओं के ज्ञाता थे। रहीम दोहावली या रहीम सतसई, बरवै नायिका भेद में जहाँ ब्रजभाषा का प्रयोग है, वहीं खड़ी बोली के प्रारंभिक चिह्न भी दिखाई देते हैं:

"रहिमन देख बड़ेन को।
लघु न दीजिए डार॥
जहाँ काम आवै सुई।
कहा करै तरवार॥"

'खेटकौतुकम' में संस्कृत व फारसी का मिश्रण है, परन्तु खड़ीबोली की दृष्टि से उनका महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है - मदनाष्टक।

उदा.- "कलित ललित माला व जवाहिर जड़ा था
चपल चखन वाला चाँदनी में खड़ा था"

तथा

"कहि परम प्यारे साँवरे को मिलाओ।
असल अमृत प्याला क्यों न मुझको पिलाओ॥

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार वास्तव में ही रहीम के काव्य में खड़ीबोली के प्रारंभिक चिह्न दिखाई देते हैं। इन रचनाओं में वैसी परिपक्वता और मधुरता नहीं है जैसी ब्रज और अवधी जैसी तत्कालीन प्रचलित काव्यभाषाओं में -

"रहिमन निज मन की व्यथा
मन ही राखो गोय।
सुनि इठिलैहैं लोग सब
बाँटि न लैहैं कोय।"

———x———

6/10 Good

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी के अरघान 'जायसी' की कविता में अवध के लोकतत्त्व की सुगंध सर्वत्र व्याप्त है। मध्यकाल में लिखा गया पद्मावत आज भी अवध के लोकजीवन को जानने के लिहाज से विशेष महत्त्व का है।

'पद्मावत' की भाषा के बारे शुक्ल जी ने कहा है कि 'भाषा की मधुरता और सहजता के लिए पद्मावत का नाम बराबर लिया जाता रहेगा।' इस रूप में पद्मावत को आधुनिक भारतीय भाषाओं का पहला महाकाव्य कहा जा सकता है।

अवधी के मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग, जैसे- 'हिय जरा', 'सूधी आंगुरी न निकसै घीऊ' और 'दंगारा' जैसे लोकप्रचलित शब्दों का प्रयोग अवध के अरघान की ही अभिव्यक्ति है।

विरहदग्ध नायिका के आँसुओं का उपमान वे निम्न रूप में देते हैं-
"नैन चुवहिं जस महवट नीरू"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनकी नायिका भी अपना रानीपन भूलकर सामान्य गृहस्थ की भाँति चिंता करती है-
" हौं बिनु नाह मंदिर को छावा।"

पनघट पर पनिहारिनों का चित्र, हाट-बाजार, नगर-वर्णन, त्यौहारों-उत्सवों का वर्णन, देवी-देवताओं और सम्बन्धों का वर्णन इस अवधान की ही अभिव्यक्ति है।

"सास ननद बोलिह जिउ लेहीं
दारुन ससुर न निसरै देही।"

वस्तुतः अवधी के अवधान ने ही जायसी के प्रेमतत्त्व को लोक से जोड़कर बैकुण्ठी बनाया है। 'मानुस-प्रेम' एक अर्थ में लोक-से जुड़ाव को भी व्यंजित करता है-

" मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी।
नाहि त काह छार भर मूठी।"

6/10

Good

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अपभ्रंश के भेद

यह विवाद का विषय रहा है कि अपभ्रंश उस परिनिष्ठित भाषा का नाम है, जो पश्चिमोत्तर भारत के आभीर-गुर्जरों की उकारबहुला भाषा से विकसित होकर राज्याश्रय के माध्यम से परिनिष्ठित रूप को प्राप्त हुई या अपभ्रंश के भी प्राकृतों की तरह कई भेद हैं।

कई पहले वैयाकरण हैं जो अपभ्रंश का साहित्यिक भाषा के रूप में जिक्र करते हैं। प्रमुख विद्वानों ने अपभ्रंश के निम्न भेद बताए हैं:-

नमिसाधु - आभीर अपभ्रंश
उपनागर अपभ्रंश
ग्राम्य अपभ्रंश

मार्कण्डेय (प्राकृत प्रकाश) - आभीर को भेद नहीं मानते।
① नागर अपभ्रंश (गुजरात में)
② उपनागर अपभ्रंश (राजस्थान में)
③ ग्राम्य अपभ्रंश

धीरेंद्र वर्मा व सुनीति कुमार चटर्जी - ये प्राकृतों की तरह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश को भी भाषा न मानकर भाषिक विकास की अवस्था मानते हैं। इनके अनुसार अपभ्रंश के 5 भेद हैं- महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी और पैशाची अपभ्रंश।

गणेश वासुदेव तगारे (Historical Grammar of Apbhramsa) में तगारे ने अपभ्रंश के 3 भेद माने हैं- पूर्वी
पश्चिमी
दक्षिणी

'दक्षिणी अपभ्रंश' जिसमें 'पुष्पदंत' की रचनाएँ हैं, को नामवर सिंह भेद नहीं मानते।

मार्कण्डेय ने तो अपभ्रंश के 27 भेद मानने वाले लोगों का जिक्र किया है।

पर यह मानने वाले विद्वान अधिक तर्कसंगत जान पड़ते हैं कि अपभ्रंश देशभाषा से विकसित परिनिष्ठित भाषा है और शेष उसके क्षेत्रीय प्रयोगगत भेद। ऐसे विद्वानों में याकोबी, पिशेल, कीथ, ज्यूल ब्लॉख, अल्सडोर्फ प्रमुख हैं।

———x———

6½/10
Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिंदी भाषा क्षेत्र को भारत के मध्यदेश के रूप में लक्षित किया जाता है, जिसमें वर्तमान भारत का हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, झारखण्ड, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान सम्मिलित है। इनके अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, असम, प० बंगाल जैसे अन्य भाषा-भाषियों में भी हिंदी अच्छी-खासी मात्रा में बोली समझी जाती है।

वैश्विक दुनिया में फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम जैसे देशों में हिंदी लोकप्रिय है और तेजी से बढ़ते प्रवासी समुदाय (जिनकी संख्या 1-1.5 करोड़ है) ने हिंदी को पूरी दुनिया में प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

वर्तमान आभासी दुनिया (वर्चुअल वर्ल्ड) में सोशल मीडिया और टीवी, मनोरंजन भी हिंदी भाषा के नए उभरते क्षेत्र के रूप में सामने आया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा-क्षेत्र के इतना विस्तृत होने के बावजूद हिन्दी के प्रभावी न हो पाने का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र का वैचारिक-वैज्ञानिक और औद्योगिक रूप में पिछड़ा होना है।

इस रूप में हिन्दी भाषा और हिन्दी भाषी क्षेत्र का भविष्य एक-दूसरे से जुड़ा है।

6/10

———×———.

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'राजस्थानी हिंदी' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'राजस्थानी हिन्दी' का रूप हमें अपभ्रंश और अवहट्ट के समय से दिखने लगता है। 'तेस्सितोरी' ने अपनी पुस्तक 'पुरानी राजस्थानी' में इस भाषा को मात्र आधुनिक भारतीय आर्यभाषा और अपभ्रंश के बीच की कड़ी भर ही नहीं माना है बल्कि 'पुरानी राजस्थानी' को क्षेत्रीय भाषाओं की जन्मदात्री होने का भी श्रेय दिया है।

'राजस्थानी हिंदी' वर्तमान भारत के राजस्थान प्रांत में और वहाँ के व्यापारी वर्ग के भारत के विभिन्न-प्रांतों में पैलने से प्रमुख शहरों में बोली जाती है।

राजस्थानी हिन्दी की प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-

① भेद - मारवाड़ी, जयपुरी या ढूँढाणी, मेवाती, मालवी।

इनमें मालवी का प्रभावक्षेत्र मध्यप्रदेश तक विस्तृत है।

② राजस्थानी हिन्दी में 'ट वर्ग' की प्रधानता है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और 'ण' ध्वनि का अत्यधिक प्रयोग होता है। 'न' का 'ण' में परिवर्तन इसका प्रमुख लक्षण है।

मन > मण
कहन लागे > कहण लागे

② ब्रजभाषा के समान राजस्थानी में ओकारांतता की प्रवृत्ति पाई जाती है।
एकवचन पुल्लिंग रूप का परिवर्तन ओकारांत रूपों में हो जाता है, जैसे
टुकड़ा > टुकड़ो
तारा > तारो

③ एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए 'ओं' प्रत्यय का प्रयोग मिलता है
तारा — तारों (बहु०)
रात — रातों (बहु०)

④ परसर्ग प्रायः ब्रजभाषा के समान हैं; पर कुछ भिन्नता है - जैसे कुण-कूंण, सें, सूं-तण सहूं।

⑤ राजस्थानी के सर्वनाम निम्न रूप में पाए जाते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है - म्हारा, थारा, जिस्का, उस्का, कौन, कूंण।

⑥ राजस्थानी में मराठी 'ळ' ध्वनि का प्रयोग भी पाया जाता है।

उदा० - 'हे री मैं तो प्रेम-दिवाणी
मेरो दरद न जाणे कोय।'
(मीरा)

——x——

Good

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक हिन्दी को जब सर्वप्रथम चंद्रधर शर्मा गुलेरी ने अपने निबंध 'पुरानी हिन्दी' में लक्षित किया था तो वे परवर्ती अपभ्रंश की बात कर रहे थे। वर्तमान में प्रारंभिक हिन्दी का तात्पर्य रोडा कृत 'राउल बेल', दामोदर पण्डित की उक्ति व्यक्ति प्रकरण, नाथों-सिद्धों की भाषा, चंदायन और यहाँ तक कि खुसरो की भाषा से है। कहने का तात्पर्य यह है कि 'प्रारंभिक हिन्दी' तक आते-आते हिन्दी का व्याकरणिक रूप वर्तमान भाषा के अत्यधिक समीप आ गया था।

विशेषताएं

① स्वरांत प्रातिपदिक। निर्विभक्तिक प्रयोग बढ़े। विकारी रूपों का प्रचलन और फलस्वरूप निम्न परसर्गों का प्रयोग।-

कर्ता - ने, न्ने
कर्म - को, सूँ
करण - सूँ, तण
सम्प्रदान -अपादान - से, सूँ.
सम्बंध - का, के, की, केर
अधिकरण - माँझि, मद्धि, आदि।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) वाक्य - विन्यास 'कर्ता - कर्म - क्रिया' के रूप में स्थिर हुआ।

(3) सर्वनाम - हम, मैं, उसने, ह्यारा, आदि।

(4) क्रिया - संयुक्त क्रिया - भागा एवं सहायक क्रिया का प्रचलन बढ़ा। अधिकांश कृदन्त रूप प्रचलन में आए। क्रिया में कालबोध हिन्दी के अधिक समीप आया।

(4) विशेषण - संज्ञा रूप के विकारी बने रहे। संख्यावाचक विशेषण और समीप आए, जैसे - इगारह, सत्तारह, अट्ठारह, अद्ध, दिवड्ढ।

प्रारंभिक हिन्दी इन व्याकरणिक विशेषताओं के साथ ड़, ढ़, म, ड़, न ध्वनियों, क्षतिपूरक दीर्घीकरण के साथ वर्तमान भाषा के लक्षण प्रकट करने लगी।

उदा० - अइसउ बृहस्पतिहि नउ मूझइ।
कान्हदेउ जानु आवणाह ह्यिआरइं भूलरी।
(~~कवि~~)
(राउलवेल)

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

9/15

" धर्मु भा पापु गा।
जस जस धर्मु बाढ़ तस तस पापु घाट।
जब जब धर्मु बाढ़ तब तब पापु ओस्ट।
(उक्ति व्यक्ति प्रकरण)

——— x ———

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) संत-साहित्य में खड़ी बोली के प्रयोग पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संत-साहित्य खड़ीबोली के प्रारंभिक प्रयोग के लिहाज से विशेष महत्त्व का है। संतों की सधुक्कड़ी भाषा, घुमक्कड़ स्वभाव और नाथों के राजस्थानी सम्बद्ध से खड़ीबोली के उदाहरण हमें संत-साहित्य में प्रभूत मात्रा में देखने को मिलते हैं, जबकि सगुण साहित्य में खड़ीबोली का प्रयोग दुर्लभ है।

प्रमुख संत कवि- नामदेव, ज्ञानदेव, कबीर, रैदास, नानक, रज्जब, दादू से लेकर हरिदास निरंजनी, अक्षर अनन्य तक।

उदाहरण

"माइ न होती बाप न होते
कर्म न होती काया।
हम नहिं होते तुम नहिं होते
कौन कहां ते आया।"
...नानक भक्तन दे पद परसे ([illegible]
निसिदिन राम चरन चित लाया।"
(नानक)

"पंडिअ सअल सत्त बक्खाणअ।
देहहिं बुद्ध बसंत ण जाणइ।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"बकरी पाती खात है
तिनकी काढ़ी खाल।
जे नर बकरी खात हैं
तिनको कौन हवाल।"

<u>प्रवृत्तियाँ</u>

① आकर्षकता
② न के स्थान पर ण का प्रयोग।
③ बड़ीबोली का वाक्य विन्यास
④ ब्रजभाषा का प्रभाव दिखता है।

बाद में व्यापारिक पूंजीवाद के प्रसार के साथ बड़ीबोली हिंदी पहले मध्यभारत की संपर्क भाषा बनी और फिर साहित्यिक भाषा।

संत-साहित्य में बड़ीबोली के प्रयोग का प्रमुख कारण संभवतः यह भी था कि अधिकांश संत निम्न कही जाने वाली जातियों से थे अतः साहित्यिक संस्कार के बोझ से दूर थे और स्वाभाविक बोलचाल की भाषा अपनाने की ओर उनका अधिक रुझान था।

इस रूप में कहा जा सकता है कि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ीबोली के विकास की दृष्टि से ध्वनी के साथ-साथ संत साहित्य विशेष महत्व का है।

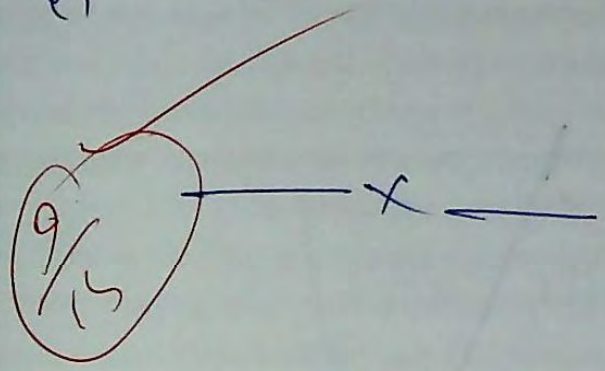

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

परम्परा की दृष्टि से विद्यापति को जयदेव और चण्डीदास का वंशज माना जा सकता है अर्थात् वे कवि जो ईश्वर की शील, शक्ति व श्रृंगार लीलाओं में से श्रृंगार को अधिक महत्त्व देते हैं। और यह स्पष्ट ही है कि सौंदर्य-वर्णन ही श्रृंगार का आधार है।

विद्यापति की सौंदर्य-चेतना हिन्दी साहित्य में अद्वितीय और अकूठ है। उनके कृष्ण और राधा दोनो अपरूप हैं-

" अपरूब के बिहि आनि मिलाओल
खिति तल लावण सार।"

उनका सौंदर्य क्षण-क्षण नवीन होने वाला और परिवर्तित होने वाला है

- "खने-खने नूतन होय।"

इस सौंदर्य से मिलन भी इतना प्रगाढ़ है कि असीम तृप्ति का अनुभव मिलता है। राधा-कृष्ण दोनों के लिए तृप्ति दूर की कौड़ी जान पड़ती है.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" जनम अवधि हम रूप निहारल
नयन न तिरपित भेल।
सोइ मधुर बोल श्रवनहि सुनल
श्रुति पथे परसन गेल ॥"

विद्यापति के सौंदर्य के केंद्र में 'वयः संधि का नायिका' है-

" चंडकि चलए खने-खन चलु मन्द।
मनमथ पाठ पहिल अनुबंध
— लखए न पारिअ जेठ कनेठ
खने आंचर दए खने होए धार।
विद्यापति कह सुनु बर कान्ह
तरुनिम शैशव चिन्हई न जाना"

इनका सौंदर्य गहरे राग से उपजा है जो स्वर्ण के समान है - आग में तपता है,

" सुजनक पेम हेम सम तूल
दहइत कनक द्विगुन होय मूल।"

इस रूप में विद्यापति की सौंदर्य चेतना अकुंठ, लोकग्राही व पाठक को आच्छादित कर लेने वाली है।

——— x ———

4.1 6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय कविताओं और उपन्यासों के साथ-साथ कहानियों के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा से 'नवीन राहों के अन्वेषी' साबित होते हैं।

नारंगी, पठार का धीरज, जयदोल, शरणार्थी, रोज, मैंग्रीन, पुलिस की सीटी अज्ञेय की प्रमुख कहानियाँ हैं। अज्ञेय की कहानियों में कविता या उपन्यासों के विपरीत नए सत्य को नए शिल्प के साथ पकड़ने की प्रविधि अपनाई गई है।

जैसे नारंगी का शिल्प प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की कहानियों जैसा है जो शरणार्थियों की मानवता और उपभोक्तावाद को रेखांकित करता है।

वहीं रोज कहानी के शिल्प में भी एक प्रकार की सपाटता, नीरसता, पुनरावृत्ति है जो कहानी के प्रभाव को और घनीभूत कर देती है। इसीलिए रोज को नई कहानी की परम्परा में माना जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय ने रिपोर्ताज, डायरी, पत्र शैली में भी कहानियाँ लिखी हैं पर वे वातावरण-सृजन से अधिक पात्र के मनोविश्लेषण और स्वयं पात्र के चिंतन की ओर अधिक रुचि रखते हैं।

इस रूप में अज्ञेय की कहानियों का शिल्प विविध होते हुए भी चिंतनपरक, व्यक्ति-केंद्रित और मनोविश्लेषणवादी धारा का मार्ग प्रशस्त करता है।

अज्ञेय की कहानियों की भाषा में भी शिल्प की तरह विविधता है और वे परिदृश्य के अनुसार गढ़ी गई हैं। चरित्रों का विकास, कथानक, वातावरण आदि के लिहाज से अज्ञेय की कहानियों में प्रेमचंद से 'नई कहानी' तक की यात्रा को रेखांकित किया जा सकता है।

——x——

Gd 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा

'इप्टा' (IPTA) अर्थात् 'इण्डियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन' भारतीय नाटक और रंगमंच के इतिहास में एक मील का पत्थर है। वास्तव में 'इप्टा' का गठन प्रगतिशील शक्तियों के सांस्कृतिक उपकरण के रूप में हुआ था। परन्तु इप्टा ने रंगमंच को एक साथ कथ्य, प्रगतिशीलता, यथार्थवादिता और वैश्विक अनुभवों से रूबरू कराया।

कैफी आज़मी, अली सरदार जाफरी, बलराज साहनी, उत्पल दत्त, जोहरा सहगल, सफदर हाशमी जैसे नाम इप्टा से जुड़े रहे और 1960-70 के दशक तक भारतीय फिल्मों तक भी इस आंदोलन का प्रभाव पहुंचा।

इप्टा के नाटक प्रायः कम संसाधनों में और यथार्थवादी-प्रगतिशील कथ्य के साथ रचायित किए जाते थे। अपने प्रभाव के लिहाज से वास्तव में ही इप्टा रंगमंच का एक संगठन नहीं अपितु आंदोलन सिद्ध हुआ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

अकहानी फ्रांस के 'Anti story Movement' से प्रभावित था। हालांकि हिंदी साहित्य में इस पर अभी भी विवाद है कि 'अ-कहानी' में 'अ' का अर्थ 'अभाव' है या विरोध।

अकहानी वास्तव में कहानी के अंदर रूमानियत का निषेध करता है और अजनबियत, अकेलापन, संत्रास को ही यथार्थ मानकर उसको अपना विषय बनाता है। इस रूप में यह नई कहानी की शहरी धारा का अगला चरण माना जा सकता है।

प्रमुख कहानियाँ- श्रीकांत वर्मा- झाड़
मणि मधुकर - कटघरे
रघुनाथ सिंह - रीढ़ (रीढ़)

शिल्प के स्तर में अकहानी आंदोलन की कहानियों में कथानक का तीव्र ह्रास हुआ है और मन:स्थितियों के संघर्ष को केंद्र में रखा गया है। शहरी परिस्थितियां, बुद्धिजीवी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वातावरण, वाद-विवाद युक्त भाषा और किसी भी निष्कर्ष का प्रभाव इन कहानियों के शिल्प की विशेषता है।

6/10

———— x ————

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) नाटककार रामकुमार वर्मा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामकुमार वर्मा, हिन्दी के प्रमुख ऐतिहासिक नाटककार हैं जिन्होंने नाटकों को ऐतिहासिक वातावरण के साथ ही प्रस्तुत किया है। आधुनिक संदर्भ इनके नाटकों से स्थान-स्थान पर दीखते हैं पर वे ऐतिहासिक समस्याओं का आधुनिकीकरण करने से बचे हैं। एक सूत्रभूत मानवीय चेतना वर्मा जी के नाटकों में इतिहास व आधुनिकता को जोड़ती है।

प्रमुख नाटक - कौमुदी महोत्सव
शिवाजी
नाना फड़नवीस
महाराणा प्रताप
भगवान बुद्ध
जहीरुद्दीन बाबर
औरंगजेब की आखिरी रात (एकांकी)

रामकुमार वर्मा के नाटकों का उद्देश्य ऐतिहासिक वातावरण का सृजन नहीं है बल्कि वे मानवीय समस्याओं जैसे द्वन्द्व, पश्चाताप को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केंद्र में रखकर नाटक रचते हैं।

उनके नाटक प्रसाद की तुलना में अधिक प्रश्नेय हैं और मोहन राकेश की तुलना में कम आधुनिक।

वर्मा जी का शिल्प सामान्य है और साहित्यिक जड़ीबोली के माध्यम से दी ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि का प्रयास है। भाषा को बोझिल बनाने से बचा गया है।

इस रूप में रामकुमार वर्मा को प्रसाद और मोहन राकेश को जोड़ने वाली कड़ी माना जा सकता है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कोणार्क नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जगदीशचंद्र माथुर को हिन्दी साहित्य के इन नाटककारों में से माना जा सकता है जो इतिहास और आधुनिकता के द्वन्द्व को साथ-साथ निर्वाह कर पाने में समर्थ हुए हैं। जगदीशचंद्र माथुर के नाटकों में कथानक ऐतिहासिक है पर समस्याएँ आधुनिक। वातावरण ऐतिहासिक है पर शिल्प आधुनिक।

'दशरथनंदन' में जहाँ रामलीला के शिल्प का प्रयोग है वहीं 'पहला राजा' और 'शारदीया' ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित है।

'कोणार्क' नाटक को ही जगदीशचंद्र माथुर का सर्वश्रेष्ठ नाटक माना जा सकता है जो कई स्तरों के द्वन्द्व का साथ-साथ निर्वहन करता है। विशु और उसके पुत्र के बीच पीढ़ीगत द्वन्द्व, राजसत्ता और सर्जनात्मकता के मध्य का द्वन्द्व और सर्जक की समाज में भूमिका का रेखांकन।

वस्तुतः सर्जक को सर्जना एकांत में रहकर करनी चाहिए या समाज के मध्य में रहकर,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसके परिवर्तनों में सक्रिय भाग लेकर; यही नाटक का केंद्रीय कथ्य है।

नाट्यवस्तु और रंगमंचीयता की दृष्टि से कोणार्क को मोहन राकेश के नाटकों की परम्परा में माना जा सकता है, जहाँ समस्या आधुनिक, वातावरण ऐतिहासिक, पात्रों की मनःस्थितियों के द्वन्द्व से कथानक का विकास, कम दृश्य, साधारण दृश्य-योजना, रंगसंकेतों की उपस्थिति आदि द्रष्टव्य है।

कोणार्क में पुष्पों, कल्पनाओं के क्रम आदि से बचा गया है और प्रभावी संवाद-योजना की व्यवस्था की गई है जो नाटक के तनाव का वहन और सृजन करने में सक्षम है।

चरित्रों का विकास, पात्र, घटनाओं की श्रृंखला सभी को सीमित रखा गया है जिससे नाटक का प्रभाव घनीभूत हो सकता।

यही कारण है कि नाट्यवस्तु के रूप

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

में तो कोणार्क एक प्रभावी नाटक है ही, रंगमंचीयता और अभिनेयता के लिहाज से भी वह विशेष महत्त्व का है।

11/2/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु के योगदान पर प्रकाश डालिए। 30

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा का वास्तविक प्रस्थान बिंदु जार्ज ग्रियर्सन के इतिहास को माना जाता है पर इस परम्परा का प्रारंभ गार्सा द तासी के साथ ही हो गया था। हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा में नाभादास, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु का योगदान निम्नवत है -

<u>नाभादास</u>

1. पूर्वपीठिका के रूप में।
2. नाभादास का '<u>भक्तमाल</u>' भक्तकवियों का एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है।
3. परन्तु यह कवियों का नहीं अपितु भक्तों और उनके माहात्म्य का जिक्र करता है।
4. मध्यकालीन बोध को समझने के लिहाज से विशेष महत्त्वपूर्ण है।
5. <u>अष्टयाम</u> नाभादास का कवित्व प्रकट करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1903 ई० में 'मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑव नार्दर्न हिन्दुस्तान' की रचना की।

विशेषताएँ

1. पहला वास्तविक इतिहास।
2. कालविभाजन व नामकरण का प्रयास।
   'दरबारी काव्य', 'भक्तिकाव्य' 'प्रेमकाव्य' 'कम्पनी के शासन में हिन्दुस्तान' जैसे नामकरण।
   ग्रियर्सन हिन्दी साहित्य को 7वीं-8वीं शताब्दी से प्रारम्भ मानते हैं।
3. भक्तिकाल के महत्त्व को रेखांकित कर पहली बार इसे स्वर्णयुग कहा।
4. प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी मिश्रित कई को हिन्दी नहीं माना।
5. तुलसीदास को सर्वश्रेष्ठ कवि माना।
6. बिहारी की कलात्मकता पर रीझकर इसे घूरोप के अधिकांश कवियों से बेहतर बताया।
7. इतिहास को व्यवस्थित रूप प्रदान किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सीमाएँ

① उर्दू को विदेशी भाषा माना।

② भक्ति के उद्भव को इस्लाम की देन माना।

⑤ नामकरण के लिए कोई वैज्ञानिक आधार नहीं रखा।

मिश्रबंधु

गणेश बिहारी मिश्र, सुखदेव बिहारी मिश्र और श्याम बिहारी मिश्र को 'मिश्रबंधु' के नाम से जाना जाता है। मिश्रबंधुओं ने 'मिश्रबन्धु विनोद' नाम से हिन्दी साहित्य का इतिहास 4 खण्डों में लिखा, जिसके प्रथम 3 खण्ड 1913 ई० में और अंतिम खण्ड 1934 ई० में प्रकाशित हुआ।

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में मिश्रबंधु विनोद के योगदान से सम्बंधित प्रमुख तथ्य निम्नवत हैं :-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

① काल विभाजन व नामकरण का तार्किक प्रयास
- काल विभाजित किए - 1. आरंभिक काल
  2. माध्यमिक काल
  3. अलंकृत काल
  4. परिवर्तन काल
  5. वर्तमान काल

* बाद में प्रथम तीन कालों को पूर्व और उत्तर में विभाजित किया - कुल 8 काल।

② कवियों के मूल्यांकन का प्रयास किया। यद्यपि मूल्यांकन का आधार तुलनात्मक व गुणशास्त्रीय ही बना रहा।

③ रीतिकाल को तुलनात्मक रूप से अधिक महत्त्व दिया।

④ इतिहास दृष्टि तो नहीं पर कवि-संग्रह के लिहाज से यह ग्रंथ विशेष महत्त्व का है। शुक्ल जी ने भी अपने इतिहास लेखन के लिए आधार-सामग्री के रूप में मिश्रबंधु विनोद का प्रयोग किया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस रूप में जहाँ नाभादास का योगदान हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में पृष्ठभूमिका के रूप में है वहीं ग्रियर्सन व मिश्रबंधु ने तत्कालीन सीमाओं के बाद भी वह आधार निर्मित किया जिस पर रामचंद्र शुक्ल के इतिहास का भवन निर्मित हो सका।

———x———

Good $17\frac{1}{2}/30$

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए।

20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सूफी दर्शन इस्लाम की मूल मान्यताओं और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के संयोग से प्रतितत्व में आया। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं।

① अनलहक की अवधारणा।
② इश्क मजाजी के माध्यम से इश्क हकीकी की यात्रा।
③ शरीयत, तरीकत, मारिफत, हकीकत।
④ फना व बका की धारणा।
⑤ मानवीय प्रेम को महत्व।
⑥ हृदय की शुद्धि। जिससे खुदा की छाया स्पष्ट होगी।
⑦ लोक संस्कृति को महत्व।

जायसी के शब्दों में।

"मानुस प्रेम भएउ बैकुंठी
नाहि त काह छार भरि मूठी॥"

20 विस्तार करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती की उपस्थिति हिंदी-कहानी-परिदृश्य में एक ताजी हवा की तरह है। कृष्णा सोबती ने कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से हिंदी कहानी को नई ऊर्जा और स्फूर्ति दी है।

प्रमुख कहानियाँ - मित्रो मरजानी (लम्बी कहानी)
बादलों के घेरे
सिक्का बदल गया

महत्त्व

① नई कहानीकार व महिला रचनाकार के रूप में कृष्णा सोबती दोनों भूमिकाओं को बखूबी निभाती है।

② नई कहानी के रूप में आधुनिक संदर्भों में बदलते स्त्री-पुरुष सम्बंध इनकी कहानियों के केंद्र में है।

③ बादलों के घेरे में रूमानी भाव है।

④ स्त्री की प्रकृत यौन भावना को पहली बार मित्रो के माध्यम से सामने रखा गया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

⑧ नई भाषा का सृजन।
जो स्त्री की यौनिकता को वहन कर सके।

⑥ पंजाबी मिश्रित उर्दू का प्रयोग किया।
विशेषकर 50 ग्राम ज़िन्दगीनामा और
कहानी सिक्का बदल गया में।

इस प्रकार कृष्णा सोबती का हिन्दी
साहित्य में वही स्थान है जो स्त्री विमर्श
में 'सिमोन' का।

———X———

और तसलीमा का

7/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद का 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक अपने कथ्य और शिल्प के कारण विशेष महत्त्व का है। कारण निम्नवत हैं:-

1. स्त्री की स्थिति को सामाजिक समस्या के केंद्र में रखा।
2. स्त्री के आत्मनिर्णय के अधिकार का रेखांकन।
3. पात्रों के मध्य द्वंद्व का सृजन। (चंद्रगुप्त के साथ-साथ अन्य पात्रों में)
4. नाटक का संक्षिप्त रूप।
5. प्रसाद ने पद्यों, दृश्यों, स्वगत कथनों आदि में कमी की है।
6. इसीलिए रंगमंचीयता और अभिनेयता के लिहाज से विशेष महत्त्व का है।
7. संक्षेप, प्रभाव के घनत्व और द्वंद्व-मनःसंघर्ष के लिहाज से 'ध्रुवस्वामिनी' को आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच का प्रस्थान बिन्दु माना जा सकता है।

—x—

6/15

पैराग्राफ़ में लिखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation